**प्रश्न :-** हिन्दी साहित्य के इतिहास के कालों के नामकरण की समस्या एवं सीमांकन पर प्रकाश डालें ?

**उत्तर :-** हिन्दी साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालखण्डों का विभाजन और उनका नामकरण वस्तुतः एक कठिन समस्या है, जिस पर विभिन्न विद्वानों में मतभेद रहा है। साहित्य के इतिहास में कालों के नामकरण के विभिन्न आधार हो सकते हैं, जैसे –

1. विकासवादिता (कालक्रम) के आधार पर – आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल।
2. शासक एवं शासन-काल के आधार पर – विक्टोरिया युग, मराठा काल।
3. प्रमुख व्यक्ति के आधार पर – गाँधी युग, चैतन्य काल।
4. प्रमुख साहित्यकार के आधार पर – भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग
5. प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति के आधार पर – छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग, भक्तिकाल, रीतिकाल।
6. सामाजिक सांस्कृतिक घटनाओं के आधार पर

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कालों के नामकरण में तत्कालीन प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति को आधार बनाकर ठीक ही किया है, क्यों कि प्रवृत्ति के आधार पर किया गया नामकरण उस युग की प्रमुख विशेषता को व्यक्त करता है। डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त का यह तर्क कि एक प्रवृत्ति को प्रमुख एवं शेष को गौण मान लेना इतिहास की एकांगी और अधूरी व्याख्या है, उचित नहीं लगता। यह ठीक है कि एक काल में अनेक प्रवृत्तियाँ एक साथ चलती हैं किन्तु नामकरण के लिए यदि 'प्रधान प्रवृत्ति' को आधार बना लिया जाय तो इसमें कुछ भी असंगत नहीं है।

सामान्यतः नाम तो संकेत-मात्र होता है तथा विशेष परिस्थिति में प्रतीक भी हो सकता है,

किन्तु वह 'निम्न' तो कदापि नहीं हो सकता। इतिहास में नाम का प्रयोग 'प्रतीक' रूप में करना ही तर्कसंगत है, उक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि —

1. काल-विभाजन साहित्यिक प्रवृत्ति के आधार पर होना चाहिए।
2. काल का नामकरण प्रमुख प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।
3. विभिन्न कालों के नामकरण में एक ही आधार ग्रहण करना चाहिए तथा उनमें एकरूपता होनी भी आवश्यक है।

विभिन्न कालों के नामकरण :-

हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थों में विभिन्न कालखण्डों के जो नामकरण किए गए हैं उनमें एकरूपता दिखाई नहीं पड़ती है। सर्वाधिक विवाद प्रथम कालखण्ड को लेकर है। यहाँ हम संक्षेप में यह प्रतिपादित करेंगे कि विभिन्न कालों के लिए विद्वानों ने क्या-क्या नाम दिए हैं और सर्वाधिक स्वीकृत मत कौन सा है।

विभिन्न कालखण्डों के नामकरण

1. आदिकाल :- आदिकाल को विभिन्न विद्वानों ने भिन्न नामों से अभिहित किया, वे इस प्रकार हैं—

(अ) आरम्भिककाल — मिश्रबंधु
(ब) वीरगाथाकाल — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(स) चारणकाल — डॉ० रामकुमार वर्मा
(द) आदिकाल — हजारी प्रसाद द्विवेदी
(य) सिद्ध सामंत युग — राहुल सांकृत्यायन
(र) बीज वपनकाल — आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
(ल) प्रारंभिक काल — डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त

इनमें से 'आदिकाल' नाम ही सर्वाधिक

स्वीकृत है। शुक्ल जी ने इस काल की रचना में 'वीरगाथा' की प्रवृत्ति प्रधान मानकर इसका नाम वीरगाथा किया, किन्तु जिन रचनाओं के आधार पर इस कालखण्ड की प्रमुख प्रवृत्ति का निर्धारण हुआ है वे अप्रमाणिक, अप्राप्य एवं परवर्ती काल की ही सिद्ध हुई हैं। अतः इस काल का उचित नाम आदिकाल ही है।

2. भक्तिकाल :-

भक्तिकाल के नाम पर कोई विवाद नहीं है। प्रायः सभी विद्वानों ने इसे 'भक्तिकाल' कहना उपयुक्त समझा है। आचार्य शुक्ल ने इस काल की प्रधान प्रवृत्ति 'भक्ति भावना' मानी है। अतः यह नाम प्रवृत्ति का परिचायक है।

कुछ लोगों ने इसे पूर्व मध्यकाल नाम भी दिया है जो विकासवादिता का सूचक है। मध्यकाल काल को दो खण्डों में बाँटा गया है — पूर्व मध्यकाल अथवा भक्तिकाल और उत्तर मध्यकाल अथवा रीतिकाल

3. रीतिकाल :-

रीतिकाल के लिए जो विभिन्न नाम दिये गये हैं, वे इस प्रकार हैं —

(क) ~~रीतिकाल~~ रीतिकाल (ख) पूर्व मध्यकाल (ग) शृंगार काल
(घ) अलंकृत काल (ङ) कला काल

रीतिकाल में कला पक्ष की प्रधानता थी, साथ ही रस की दृष्टि से इसमें शृंगार रस को विशेष महत्व दिया गया। इसके साथ-साथ रीतिकालीन कविता में 'अलंकरण' की प्रवृत्ति भी प्रमुखता से पाई जाती है। इन्हीं को आधार बनाकर कुछ विद्वानों ने इसे उक्त नामों से अभिहित किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है कि इस काल के अधिकांश कवियों ने रीति-ग्रंथों का निर्माण करते हुए काव्यांगों के लक्षण और उदाहरण प्रस्तुत करने का कार्य

किया, 'रीति' की प्रधान-प्रवृत्ति होने से इसका नामकरण 'रीतिकाल' उचित ही है। रीतिकाल को पुनः तीन उपवर्गों में विभक्त किया गया — रीतिबद्ध, रीतिमुक्त और रीतिसिद्ध। यह वर्गीकरण भी 'रीति' को ध्यान में रखकर किया गया है।

(५) आधुनिक काल :-

आधुनिक काल के लिए दिए गए विभिन्न नाम इस प्रकार हैं —

(अ) गद्य काल (ब) वर्तमान काल (स) आधुनिक काल

आचार्य शुक्ल ने इस कालखण्ड में गद्य रचना की प्रवृत्ति को प्रधान मानकर इसका नाम गद्यकाल रखा है, किन्तु इस नाम से यह आभास होता है, जैसे इसमें पद्य था ही नहीं। वस्तुतः इस काल को अधिकांश विद्वान आधुनिक काल कहना ही उपयुक्त समझते हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रंथों में जो नाम सर्वाधिक प्रचलित हैं, वे इस प्रकार हैं —

1. आदिकाल (1000ई० - 1350ई०)
२. भक्तिकाल (1350ई० - 1650ई०)
३. रीतिकाल (1650ई० - 1850ई०)
४. आधुनिक काल (1850ई० - अब तक)

हिन्दी साहित्य के इतिहास का सीमांकन :-

हिन्दी साहित्य के इतिहास के विवादास्पद प्रश्नों में से एक प्रश्न यह भी है कि हिन्दी साहित्य की प्रारंभिक सीमा क्या है? हिन्दी साहित्य के आरम्भ का प्रश्न वस्तुतः हिन्दी भाषा के आरम्भ से सम्बन्धित है। किसी भाषा का विकास अचानक नहीं हो जाता। हिन्दी से ठीक पहले की भाषा अपभ्रंश है, जो मोटे तौर पर 1000 ई के

आस-पास तक साहित्य में प्रचलित रही, किन्तु उसके बाद इसका प्रयोग कम हो गया और देशभाषा हिन्दी में काव्य-रचना की जाने लगी।

यद्यपि अपभ्रंश की रचनाएँ तो 1२ वीं शती तक होती रहीं, किन्तु 1000 ई० के बाद हिन्दी की रचनाएँ मिलने लगीं। इसके नाम हैं —

1. विजयपाल रासो — नल्ल सिंह
2. हम्मीर रासो — शार्ङ्गधर
3. कीर्तिलता — विद्यापति
4. कीर्तिपताका — विद्यापति

एक विवाद हिन्दी के प्रारम्भिक रूप एवं उत्तरकालीन अपभ्रंश को लेकर भी है। कुछ लोगों ने उत्तरकालीन अपभ्रंश को ही हिन्दी मानकर अपभ्रंश की रचनाओं को हिन्दी में समेट लेने का कार्य किया है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' के लेख का आधार ग्रहण करते हुए 'उत्तरकालीन अपभ्रंश' की रचनाओं को हिन्दी में स्थान दिया। यही कारण है कि वीरगाथाकाल की उपलब्ध सामग्री में उन्होंने चार ऐसी रचनाओं को स्थान दिया है, जो अपभ्रंश में लिखी गई हैं- इनके नाम हैं —

1. विजयपाल रासो — नल्ल सिंह
2. हम्मीर रासो — शार्ङ्गधर
3. कीर्तिलता — विद्यापति
4. कीर्तिपताका — विद्यापति

शुक्ल जी के साथ सहमति व्यक्त करते हुए बाबू श्यामसुन्दर दास एवं आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भी अपभ्रंश काव्य को हिन्दी में समाविष्ट करते रहे। द्विवेदी जी के अनुसार — बारहवीं

शताब्दी तक निश्चित रूप से अपभ्रंश भाषा ही पुरानी हिन्दी के रूप में चलती थी, यद्यपि उसमें नये तत्सम शब्दों का आगमन शुरु हो गया था।" डॉ० भोलाशंकर व्यास ने हिन्दी के आरम्भिक रूप को "अवहट्ट" कहा है,

हिन्दी साहित्य के आरम्भ का निर्णय भाषा के आधार पर ही किया जा सकता है। कुछ विद्वानों ने तो अपभ्रंश की रचनाओं को हिन्दी में समेटने की भूल करते हुए हिन्दी साहित्य को 7 वीं शती के प्रारम्भ तक ले जाने का कार्य किया है। वास्तविकता यह है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास का प्रारम्भ 1000 ई० से मानना ही उचित है, शुक्ल जी इसी मत के समर्थक हैं। यदि सरहपाद को हिन्दी का प्रथम कवि मान लें तो हिन्दी साहित्य की प्रारम्भिक सीमा 8 वीं शती ई० (769 ई०) निश्चित हो जाती है, राहुल सांकृत्यायन, ग्रियर्सन, शिवसिंह, मिश्रबंधु, गुलेरी जी, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा डॉ० रामकुमार वर्मा इससे सहमत हैं किन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इस मत से सहमत नहीं हैं, उनके अनुसार हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ 'मुंज' और 'भोज' के समय से हुआ अर्थात 993 ई० से पुरानी हिन्दी का प्रयोग साहित्य में हुआ।

शुक्ल जी सिद्धों और जैन कवियों की रचनाओं को हिन्दी साहित्य से बाहर रखने के पक्षधर नहीं थे, अतः प्रकारान्तर से वे भी आदिकाल की सीमा को पीछे की ओर 8 वीं शती तक ले ही जाते हैं, —

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

1. प्रश्न — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विभिन्न कालों के जो नाम दिए हैं, वे कहाँ तक उचित हैं? उनमें आप क्या संशोधन कर सकते हैं?

२. प्रश्न- विभिन्न कालों के नामकरण की समस्या पर प्रकाश डालिए ?

३. प्रश्न- हिन्दी साहित्य के प्रारम्भ का सीमांकन करते हुए हिन्दी की 'प्रथम रचना' एवं 'प्रथम कवि' के विषय में अपना मत व्यक्त कीजिए ?

पता -
डॉ० समदर्शी कुमार
(B.R.A.B.U.M) - विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C)
मो०नं० - 7909046087
दिनांक - 06 . 02 . 2023